

शेंदूर लाल चढायो आरती

जय जयजी गणराज विद्या सुखदाता ।
धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता ॥ ध्रु० ॥

शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुखको ।
दौदिल लाल बिराजे सुत गौरीहरको ॥
हाथ लिये गुडलड्डू साईं सुरवरको ।
महिमा कहे न जाय लागत हूँ पदको ॥१॥

अष्टी सिद्धी दासी संकटको बैरी ।
विघ्नविनाशन मंगलमूरत अधिकाई ॥
कोटीसुरजप्रकाश ऐसी छबि तेरी ।
गंडस्थलमदमस्तक झुले शशिवहारी ॥जय० ॥२॥

भावभगतिसे कोई शारणागत आवे ।
संतति संपति सबही भरपूर पावे ।
ऐसे तुम महाराज मोको अति भवे ।
गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे ॥ जय० ॥३॥